shrI yAdagiri laxmInRisinha stotram

श्रीयादगिरि लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रम्

Document Information

Text title : yAdagiri lakShmInRisi.nha stotra

File name : yAdagirilaxminRisimhastotra.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, stotra, vAngIpuram-narasinhAchArya, vishnu

Location : doc_vishhnu

Author : vA.ngIpuram narasi.nhAchArya

Transliterated by : Venkata N Vangeepuram vangeepuram at rediffmail.com

Proofread by : Venkata N Vangeepuram vangeepuram at rediffmail.com Great grandson of the composer

Latest update : December 15, 2004

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीयादगिरि लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रम्

नरसिंह रमेश कृपा जलधे
सुरवैरि हिरण्य विदारणतः
नरलोक हितार्दरतस्सततम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ १॥

करुणारसपूर विधेयतयाऽ
सुरबालक बाधनिवारणतः
सममेव विदारितवानसुरम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ २॥

नरकेसरि रूपनिरूपणतः
सुरशेखर रूप निरूपकताम्
गमयन् शमयन् नरलोकरुजम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ३॥

जनताभिमतार्पण शीलपते
भवभीत समुद्धरणैकमते
सुरनायक नायक लोकपते
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ४॥

नरलोकभयानक रूपमिदम्
प्रधितम् रचयन् नरलोकभियाम्
सकलस्यतु शांति करोभिमतः
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ५॥

अवतार गणेश्वति चित्रपदम्
नरकेसरि मिश्रित रूपमिदम्
प्रकटीकुरुतेऽघटिते घटनाम्
तवदिव्यविधाम् नरसिंह विभो! ॥ ६॥

करुणाकलयाखिल लोकमिदम्
सकलार्थ समृद्धि रमाभरणम्
कलयन् जनिकारणकारणभो
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ७॥

पिताश्रीनृसिंहः विभुश्रीनृसिंहः
गतिश्रीनृसिंहः धनम् श्रीनृसिंहः
भजेश्रीनृसिंहम् - भजे श्रीनृसिंहम्
नृसिंहम् भजे यादशैलेशमीशम् ॥ ८॥

नमेज्ञानमात्यंतिको भक्तिभावः
नमेसाधुचर्यात्वमेवासि सर्वम्
इतीवापिविश्वास ऐषः त्वदीयः
त्वदीयोप्यहम् सर्वमेवम् त्वदीयम् ॥ ९॥

त्वदीयेसमस्ते मदीयत्वभावात्
चिरात्संभृतात् मोहितोनाथसत्यम्
इदानीम् तु लक्ष्मीशसेवाविशेषात्
निरस्तम् हि मे मोहजातम् समस्तम् ॥ १०॥

अजानतामयानाथ! जन्मकोटिशतैरपि
कृतानि सर्वपापानि क्षंतव्यानि दयामय ॥ ११॥

॥ इति श्री वांगीपुरम् नरसिंहाचार्य विरचितं
श्री यादगिरि लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्रं समाप्तम् ॥

Encoded and proofread by Venkata N Vangeepuram
vangeepuram@rediffmail.com

shrI yAdagiri laxmInRisinha stotram
pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*